P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-III *November-2014
E: ISSN NO.: 2349 – 980X

हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा के अटूट आराधक श्रीकृष्ण 'सरल' जी के महाकाव्यों के चरित नायकों के चरित्रगत विशेषताओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन–(शहीद भगत सिंह, आजाद अशफाक उल्ला खाँ के विशेष संदर्भ में)

सुनीता मसराम
प्रभारी प्राचार्या,
शास0 कन्या महाविद्यालय,
कटनी (म0प्र0)

सारांश

''सरल'' जी का सम्पूर्ण कथा–साहित्य राष्ट्रीयता के उदात्त मूल्यों से अनुप्राणित है और उनके सम्पूर्ण कथा–नायक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अपराजेय सेनानी, और कौन नहीं जानता कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपने जीवन का उत्सर्ग करने वाले क्रांतिवीरों का गौरवमय इतिहास है । इन वीरों की संख्या अंगुलियों पर नही गिनी जा सकती । स्वतंत्रता की बलिवेदी पर हंसते–हंसते न्यौछावर होने वाले इन वीरों की गाथा आप–हममें से कितने लोग जानते है? हम दो–चार का नाम स्मरण कर आजादी दिलाने वालों के प्रति अपनी श्रद्धा की इतिश्री कर लेते हैं, किंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये भारत के हजारों देश–भक्त विदेशों में क्रांतिबीज बोते रहें, जूझते रहें, और अपने जीवन को होम करते रहे । माटी की गंध से सराबोर उनका जीवन माटी की धरोहर बन गया। भारत माता के ऐसे बलिदानी सपूतों को यदि, आज हम याद नहीं करेंगे, तो कल देश पर कोई बलिदान नहीं होगा । स्वतंत्रता हमारे लिये फिर अलभ्य हो जायेगी। श्री कृष्ण 'सरल' ने इसी महान उद्देश्य से प्रेरित होकर देश पर मर मिटने वाले देशप्रेमियों की जीवन रेखाओं की कहानियों एवं उपन्यास का रूप दिया है । युगीन संदर्भो एवं युग–बोध से जुड़ी होने के कारण इनका कथा–साहित्य इतिहास के अधिक निकट है ।

मुख्य शब्द :राष्ट्रीय–चेतना, क्रान्ति–चेतना, सांस्कृतिक–चेतना, स्वाधीनता–संग्राम।

प्रस्तावना

किसी भी महाकाव्य की संरचना का मूलाधार उसकी कथावस्तु होती है। विविध घटनाओं का संयोजन कथानक को जन्म देता है और पात्रों के अभाव में घटनाओं का घटित होना संभव नहीं है। इस दृष्टि से महाकाव्य की कथावस्तु के निर्माण में पात्रों की भूमिका महत्वपूर्ण है। यद्यपि ऐतिहासिक घटनाओं तथा पात्रों के वर्णन में महाकाव्यकार को यथार्थ चित्रण पर बल देना पड़ता है किन्तु घटनाओं के संयोजन तथा पात्रों के चरित्र–चित्रण में वह अपनी कल्पना–शक्ति का भी यथासंभव प्रयोग करता है। चूँकि महाकाव्य मात्र ऐतिहासिक घटनाओं और पात्रों का वर्णन नहीं है, उसमें मानव–जीवन के विभिन्न अन्तः पक्षों का उद्घाटन भी होता है, अतः महाकाव्यकार अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा द्वारा कल्पना के इन्द्रधनुषी आकर्षक रंगों से इतिहास के रेखा–चित्र को सजाता–सँवारता है।

क्रान्ति की विभिन्न धाराएँ

कविवर श्रीकृष्ण सरल के समस्त महाकाव्यों के चिरत–नायक भारतीय संस्कृति, धर्म तथा राष्ट्रीय–चेतना के आदर्श इतिहास–पुरूष रहे हैं। सरल जी की काव्य–चेतना मुख्यताः तीन धाराओं में विभक्त होकर प्रवाहित होकर प्रवाहित हुई है। प्रथमतः राष्ट्रीय क्रान्ति–चेतना, द्वितीयतः सांस्कृतिक–चेतना और अन्ततः धार्मिक–चेतना। उनकी क्रान्ति–चेतना सम्पन्न राष्ट्रीय काव्य धारा को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है।

1. सशस्त्र क्रान्ति की तेजस्वी काव्य–धारा
2. वैचारिक क्रान्ति की ओजस्वी काव्य–धारा
3. सांस्कृतिक–धार्मिक क्रान्ति की मनस्वी काव्य–धारा।

परतंत्रता की लौह–श्रृंखलाओं में जकड़ी हुई अथवा राक्षसी अत्याचारों से पीड़ित भारत–माता को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने के लिए जो देशभक्त अपना शीर्ष हथेली पर लेकर दौड़ पड़े थे, या जिन्होनें "तुम मुझे खून

दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा" का उद्घोष किया था, या जिन्होने भारतमाता की आजादी की खातिर इलाहाबाद के एल्फ्रेड पार्क में अपनें सीने पर निर्भयतापूर्वक गोलियां खाई थी, या जिन्होने बमों के धमाकों से ब्रिटिश साम्राज्यशाही की नींव हिलाकर रख दी थी, या फिर जो देश को स्वाधीन कराने की लालसा लिए हुए हँसते–हँसते फाँसी के फन्दों पर झूल गए थे, या मध्यकाल में भारत में फैली निराशा और हताशा के घने अन्धकार में समाज का पथ–प्रदर्शन जिन्होनें किया था, या जिन्होंने रावणी–अत्याचारों से आर्यावर्त को मुक्ति दी थी, उन्ही अमर शहीदों और इतिहास–पुरूषों को कविवर सरल जी ने अपनी काव्यार्चना का स्वाधीनता–संग्राम के उज्वल इतिहास को एवं भारत की यशस्वी बलिदानी परम्परा को तथा साध्य बनाया है। उन्होंने भारतीय धार्मिक–सांस्कृतिक चेतना के इतिहास–पुरूषों को ही अपने सम्पूर्ण काव्य का इष्ट बनाया है। चारित्रिक उदात्तता उनके चरित–नायकों का सामान्य गुण–धर्म है। धीरता, उदात्तता, लालित्य, औद्धत्य, प्रशान्तता आदि जिन गुणों के आधार पर महाकाव्य के नायकों का वर्गीकरण किया गया है, वे सभी तत्व और गुण–धर्म कविवर सरल जी के महाकाव्यों के चरित्र–नायकों के व्यतिव में प्रत्यक्षतः अथवा परोक्षतः समाहित हैं, जिनका पृथक्तः विवेचन समीचीन हैं।

कविवर प्रो. श्रीकृष्ण सरल के महाकाव्यों के चरित्र–नायकों को भी चार भागों में विभक्त किया जा सकता है –

1. **सशस्त्र–क्रान्ति के प्रणेता चरित–नायक :**
   भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुभाषचन्द्र बोस, अशफ़ाक उल्ला खाँ, रामप्रसाद 'बिस्मिल', राम बिहारी बोस, सुखदेव, राजगुरू, कर्तारसिंह सराबा, तिलका माझी, मंगल पाण्ड़े, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नाना साहब, वासुदेव बलवन फड़के, चाफेकर–बन्धु गोआ–मुक्ति–आन्दोलन के शहीद राजाभाऊ महाकाल आदि।
2. **वैचारिक–क्रान्ति के प्रणेता चरितः**
   नायक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक महात्मा गांधी, मैडम भीकाजी कामा, दादा भाई नौरोजी, श्यामजी कृष्ण वर्मा, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि।
3. **सांस्कृतिक–सामाजिक–क्रान्ति के प्रणेता चरित–नायकः**
   स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, गोस्वामी तुलसीदास आदि।
4. **धार्मिक–क्रान्ति के प्रणेता चरित–नायकः**

रामकथा के आदर्ष चरित्र–नायक श्री राम, लक्ष्मण, हनुमान आदि। कविवर प्रो. श्री कृष्ण सरल ने अपने महाकाव्य, 'क्रान्ति–गंगा' में जिसे क्रान्तिकारियों का 'इन साइक्लोपीडिया' कहा जाता है, भारतीय स्वाधीनता–संग्राम के अनेक बलिदानियों को अपने काव्य का प्रतिपाद्य बनाया है। इन क्रान्तितदर्शी पात्रों में नाना साहब की पुत्री मैना, रानी चेत्रम्मा, रानी लक्ष्मीबाई, क्रान्तिकारिणी मैडम भीकाजी कामा, दुर्गा भाभी जैसी क्रान्ति–पथी वीरांगनाओं के आदर्श चरित्रों को भी सरल जी ने श्रद्धापूर्वक रेखांकित किया है। उनका ध्येय ही रहा है–

'क्रान्ति के जो देवता मेरे लिए आराध्य,

('सरदार भगत सिंह', पृ. 13)

इसी आधार पर सरल जी ने अपने महाकव्य के चरित्र–नायकों की चरित्रगत–विशेषताओं का उद्घाटन किया है। यथा –

सरदार भगतसिंह

ऐतिहासिक दृष्टि से शहीदेआजम भगत सिंह की गणना क्रान्तिकारी देशभक्तों की उज्वल परम्परा में एक जाज्वल्यमान नक्षत्र के रूप में की जाती है। महान क्रान्तिकारी खुदीराम बोस, मदनलाल धींगर, कर्त्तीर सिंह सराबा, अशफाक उल्ला खाँ, रामप्रसाद 'बिस्मिल' आदि ने जिस प्रकार हँसते–हँसते फाँसी के फन्दों को चूमा था उसी प्रकार भगत सिंह ने भी अपनी शहादत से आजादी के दीवानों को प्रेरणा दी थी। सुप्रसिद्ध लेखक के. के. खुल्लर के अनुसार – 'सरदार भगत सिंह ने अपने अल्पकालीन जीवन (मात्र तेईस वर्ष की अवस्था) में जैसी देशव्यापी ख्याति और आम जनता का प्यार–दुलार पाया उसे प्राप्त करने का श्रेय भारत के क्रान्तिकारी इतिहास में इने गिने लोगों को प्राप्त हुआ है। वस्तुतः सरदार भगत सिंह एक नए, श्रेष्ठ और गर्वीले भारत का प्रतीक था। उसके जीवन की मर्मस्पर्षी कहानी और उससे भी अधिक झकझोर देनेवाली उसकी मृत्यु की कहानी ने उसे बीसवीं शताब्दी का असाधारण व्यतिव बना दिया वह भारत की शक्ति और एकता का प्रतीक था।'

कविवर श्रीकृष्ण सरल ने भी अपने प्रथम महाकाव्य 'सरदार भगत सिंह' में प्रमुख चरित–नायक शहीदे आजम भगत सिंह को धीरोदात्त नायक के रूप में प्रस्तुत किया है। भगत सिंह के व्यक्तित्व में देशभक्ति, राष्ट्र–प्रेम, शौर्य, पराक्रम, साहस, त्याग, बलिदान, जैसे अद्वितीय गुणों का अनूठा और उदात्त संगम समाहित है। उसका जन्म क्रान्तिकारियों की उस वंष–परम्परा में हुआ था जिसने रूढ़ियों, अन्यायों और अंग्रेजों के अत्याचारों का साहसपूर्वक विरोध जैसे गुण भगत सिंह को अपने पूर्वजों से पैतृक धरोहर के रूप में मिले थे। कालान्तर में इन्ही गुण–धर्मों से भगत सिंह का व्यक्तित्व निर्मित और विकसित हुआ।

बाल्यावस्था में ही भगत सिंह राष्ट्रीय वातावरण से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। क्रान्तिवीर कर्तार सिंह सराबा को 13 सितम्बर 1914 में दी जाने वाली फाँसी तथा 13 अप्रैल 1919 को घटित जलियाँ वाला बाग के नृषंस हत्याकाण्ड ने न केवल भगत सिंह की चेतना को झकझोर डाला बल्कि उसकी जीवन–धारा को ही मोड़ दिया। वह 11 वर्ष 6 महीने और 16 दिन उम्र में ही लाहौर से अमृतसर जा पहुँचा और वहाँ से उस जघन्य हत्याकाण्ड के शहीदों की रक्त–रंजित मिट्टि लेकर लौटा जिसका अर्चन–वन्दन वह नित्य ताजे फूलों और अपने रक्त से किया करता था। उस बलिददानी मिट्टी के प्रभाव से वह अपने संकल्पों और प्रतिज्ञा को नित्य इस रूप में दुहराता था कि –

'यह मिट्टी जो कि शहीदों के शोणित से सनी हुई है
यह मिट्टी मेरे जीवन के लिए प्रेरणा बनी हुई है।
भूल न पाएं जिसको सदियाँ, मैं ऐसी ही मौत मरूँगा
अपने शोणित से धरती की आजादी की मांग भरूँगा।'

('सरदार भगत सिंह'(स.म. ग्रन्था.)पृ.76)

भगत सिंह के यौवन के उन्मेश में सरल जी को प्रकृति के उदात्त स्वरूप की झलक दिखाई पड़ती है। उसका

सौन्दर्य यदि चन्द्रमा के समान आकर्षक हैं तो उसके संकल्पों में पर्वत जैसी अडिगता और उमंगों में सागर का ज्वार झलकता था जिसका वर्णन सरल जी ने ओजस्वी शब्दों में इस प्रकार किया है –

'चाँद दूज का तुमने बढ़कर नभ में चढते देखा होगा,
यौवन की मंजिल पर उसको आगे बढ़ते देखा होगा
तुमने महासिन्धु में भीषण ज्वार उफनते देखा होगा
तुमने सागर की लहरों को पर्वत बनते देखा होगा
तुमने धरती के आँगन में अंधड़ आते देखा होगा
रौद्र रूप धर तुमने उसको धूम मचाते देखा होगा
भगत सिंह बन गया बगूला ऐसे ही प्रचण्ड यौवन का
उसके संकल्पों में जाग्रत बल था उनचास पवन का।
उस मतवाले का यौवन अब पौरूष के पथ पर चलता था
जो उसने प्रण ठान रखा था वह प्रतिपल उर में जलता था'

('सरदार भगत सिंह'(स.म. ग्रन्था.)पृ. 109)

यौवन के मीठे सुख–स्वप्न जव भगत सिंह के सामने मोहक इन्द्रजाल फैलाते हैं, परिणय–बन्धन की सुखद कल्पना जब उसके हृदय को गुदगुदाती है तो उसके हृदय में जो उन्तर्द्वन्द्व उठता है उसका मनोवैज्ञानिक चित्रण कर सरल जी ने भगत सिंह के उदात्त को परोक्षतः रेखांकित किया है यथा –

'भगत सिंह क्यों करते तुम ये बहकी–बहकी बातें
छोड़ रहे क्यों दिवस सुनहले रजत रंजिता रातें
जीवन के रंगीन क्षणों में राग–रंग अपनाओ
यौवन पाया तो मीठे सपनों से इसे सजाओ।
नहीं, नहीं, यह कभी न होगा मुझे नही समझाओ
यह सम्मोहक पुष्प–वाण तुम मुझ पर नही चलाओ।
मैं सैनिक–व्रत ठान चुका हूँ, मुक्ति लक्ष्य है मेरा
अपनी धरती पर लाना है मुझको स्वर्ण–सबेरा।
मेरा भी संकल्प, नहीं परिणय तब तक संभव है
मातृभूमि की मुक्ति प्राप्ति होती न हमें जब तक है।
वैभव हों सब त्याज्य, चरणरज ही मस्तक पर झेलूँ
मैं जीवन के खेल मौत के घर में जाकर खेलूँ।'

('सरदार भगत सिंह'(स.म. ग्रन्था.))

यौवन के उन्मेष के साथ ही भगत सिंह के हृदय में देश–प्रेम तथा आजादी का संकल्प दृढ़ से दृढ़तर होता जाता है। गणेश शंकर विद्यार्थी, चन्द्रशेखर, 'आजाद', बटुकेश्वर दत्त, जयदेव कपूर, विजय कुमार सिन्हा, योगेश चन्द्र चटर्जी जैसे क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आकर भगत सिंह के हृदय में अंग्रेजी–शासन के प्रति घृणा एवं उनके अत्याचारों के प्रति आक्रोश की ज्वालाएँ धधकने लगती हैं जिसकी परिणति 'साण्डर्स–वध' में होती है। देश की आजादी के लिए सुशप्त राष्ट्रीयता को जगाने के लिए पार्लियामेण्ट में बम फेंकना तथा हँसते–हँसते फाँसी के फनदे को चूमना भगत सिंह के अनुपम शौर्य तथा अप्रतिम बलिदान की भावना की चरम परिणति है, उसके संकल्प का ओजस्वी वर्णन कर सरल जी ने भगत सिंह के बलिदानी चरित्र को उजागर किया है, यथा –

'क्रान्ति–अर्चना के लिए हम कटिबद्ध
हैं।
क्रान्ति से जिएँगे
हम क्रान्ति को जिएँगे अब
साँस – साँस बोलेगी
क्रान्ति चिरजीवी हो।'

('सरदार भगत सिंह'(स.म. ग्रन्था.))

भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू द्वारा हँसते–हँसते उस मृत्यु को आमंत्रण देना जिसका नाम सुनकर ही बड़े–बड़े लोग काँप जाते हैं और फिर फाँसी पर मस्ती से झूलने के दृश्य को सरल जी ने बड़े भावुकतापूर्ण यथार्थ चित्रण से चित्रित किया है, यथा –

'मौत, नाम सुनते ही जिसका लोग काँप जाते हैं,
भय इनसे भयभीत, उसे यह कैसी उल्हड़ मस्ती
वन्दनीय है सचमुच ही इन दीवानों की हस्ती।
भारत माँ के तीन सुकोमल फूल हुए न्यौछावर
हँसते–हँसते झूल गए वे, फाँसी के फनदों पर।'

('सरदार भगत सिंह'(स.म.ग्रन्था.))

भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू ने जिस मस्ती और जिन्दादिली के साथ फांसी के फनदों को गले लगाया था, वह उनके आजादी के लिए दीवानेपन, देश–प्रेम के पागलपन, मातृ–भूमि की बलि–वेदी पर सर्वस्व निछावर कर देने की अदम्य लालसा और पराधीनता की बेड़ियों से वन्दिनी भारत–माता को मुक्त कराने के दृढ़ संकल्प का प्रतीक है। यही कारण है कि ये तीनों अमर शहीद क्रान्ति के अक्षय प्रेरणा–स्त्रोत बनकर सदा के लिए अमर हो गए। कविवर सरल जी ने इन इतिहास प्रमाणित तथ्यों द्वारा भगत सिंह के जिस क्रान्तिपथी बलिदानी चरित्र और उनके प्रति जन–गण–मन की श्रद्धा–भावना का चित्रण किया है वह शहीदे आजम भागत सिंह के चारित्रिक वैशिष्ट्य के सर्वथा अनुरूप है यथा –

'तुम अनंग बन जीवित हो, भारत के जीवन में
लगता जैसे समा गए तुम, भारत के दर्शन में।
लगता जैसे क्रान्ति अमर के गगन–घोष में तुम हो
लगता जैसे प्रबल रक्त के क्रुद्ध रोष में तुम हो।
लगता जैसे तुम जीवित हो जागती के कण–कण में
लगता जैसे तुम जीवित हर देश–भक्त के प्रण में
युग की क्रान्ति–भावनाओं में अब भी रमे हुए हो
बलिदानों के मानदण्ड से मन पर जमे हुए हो'

('सरदार भगत सिंह'(स.म. ग्रन्था.))

अजेय सेनानी चन्द्रशेखर 'आजाद'

क्रान्ति–चेतना, शौर्य, पराक्रम, साहस, दृढ़ता, ध्येय–निष्ठा, अडिग संकल्प, धैर्य, संयम, स्वाभिमान, अडिग देश–प्रेम तथा सतत् संघर्ष की प्रतिमूर्ति थे महान क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर 'आजाद' का सम्पूर्ण जीवन ही देश की आजादी के लिए किए गए सशस्त्र संघर्ष की एक बेजोड़ कहानी है। वह जब तक जिए शान से आजाद रहकर जिए और जब स्वयमेव मृत्यु का वरण उन्होनें किया तो वह भी शान से। आजाद एक ऐसा क्रान्तिकारी था जिसके व्यक्तित्व में 'राम का शौर्य', शिव का लोक–कल्याण, दधीचिका त्याग, हरिश्चन्द्र की सत्यनिष्ठ दानवीरता, बुद्ध की निष्ठा, महावीर का संयम, पैगम्बर की साधना एवं ईसा की क्षमा आदि सभी गुण घुले–मिले थे। 'आजाद' की देश–भक्ति में मीरा जैसा समर्पण एवं तड़प थी और चैतन्य की तमन्यता। देश की

मुक्ति–स्वाधीनता आजाद का लक्ष्य था और वीरता उसका धर्म।

'चन्द्रशेखर आजाद' अपने राजनीतिक जीवन में जितने बड़े कान्तिकारी, दृढ़ संकल्पों, कुशल आयोजक, साहसी, सरलचेता, सत्यवादी और शुद्धचेता था, अपने व्यक्तिगत जीवन में उतने ही सरल, हँसमुख, विश्वसनीय, स्नेहशील और उदार भी थे। नारी–वर्ग के प्रति उनके मन में आपार–श्रद्धा–भावना थी। 1) कविवर सरल जी ने अपनी काव्य–प्रतिभा से चन्द्रशेखर आजाद के आभ्यन्तर एवं वाह्य व्यक्तित्व को इन्हों गुणों तथा विशेषताओं के ताने–बाने से रूपायित किया है। उन्होंने अपने महाकाव्य के 'आत्म–दर्शन' शीर्षक में 'आजाद' के क्रान्तिकारी नायकोचित, व्यक्तित्व का उद्घाटन करते हुए उत्तम पुरूष एकवचन शैली में लिखा है कि –

'चन्द्रशेखर नाम सूरज का प्रखर उत्ताप हूँ मैं
फूटते ज्वालामुखी या क्रान्ति का उद्घोष हूँ मैं।
विवश अधरों पर सुलगता गीत हूँ विद्रोह का मैं
नाश के मन पर नशे जैसा चढ़ा उन्माद हूँ मैं
मैं गुलामी का कफन, उजला सपन स्वाधीनता का
नाम से आजाद हर संकल्प से फौलाद हूँ मैं।
सिसकियों पर अब किसी अन्याय को पलने न दूँगा
जुल्म के सिक्के किसी के मैं यहां चलने न दूँगा।

('चन्द्रशेखर' आजाद)

मुक्ति–पथ के पथिक सन्तों–भक्तों और मात्–भूमि की बलिवेदी पर प्राण निधावर कर देने का संकल्प लेने वाले क्रान्तिपथी बलिददानियों के जीवन में सुकोमल प्रणय–भावनाओं के लिए कोई हानि नही होता है। उनका संयम तो हिमालय की भाँति अडिग और अविचल होता है। कविवर सरलजी ने अपने चरित–नायक चन्द्रशेखर आजाद के संयम, धैर्य तथा नारी के प्रति जिन उच्चादर्शों का चित्रण किया है वह 'आजाद' के इतिहास सम्मत व्यक्तित्व और संयमी चरित्र के सर्वथा अनुकूल है। योगी के वेश में ओरछा के जंगलों में सातार नदी के किनारे कुटिया बनाकर कालक्षेप करने वाले चन्द्रशेखर 'आजाद' के सामने एक दिन योगमाया जैसी रूप–लावण्यमयी तरूणी उपस्थित होकर स्वयं समर्पण का प्रस्ताव रखती है; यथा –

'दो तन होकर हम एक रूप हो जायें
हम करें आज नवजीवन नवरस अर्जित।'

रूपसी के इस मोहक पर आजाद उत्तर देते हैं कि –

'तुम शक्ति स्वरूपा फिर क्यों यह दुर्बलता,
क्या शोभित नारी को, इतनी चंचलता
हूँ विवश देवी, मैं तिल भर नहीं हिलूँगा
इस जीवन में तो तुमको नही मिलूँगा
मेरे जीवन में नारी केवल माँ है
वह ज्योतित पूनम है, नहीं अमा है
आना है तो अगले जीवन में आना
माँ बनकर मुझको अपने गले लगाना।'

इतने आडिग धैर्य और अपराजेय संयम का परिचय 'आजाद' के ऐतिहासिक चरित्र के सर्वधा अनुकूल है।

क्रान्ति–पुरूष चन्द्रषेखर 'आजाद' का मातृ–भूमि की बलिवेदी पर अप्रतिम वलिदानी–भावना से प्राण निछावर कर देना भारत के स्वाधीनता–संग्राम का ऐसा गौरवशाली स्वर्णिम पृष्ठ है जिस पर प्रत्येक भारतीय की गर्व है। यही कारण है कि अपने महाकव्य के चरित–नायक चन्द्रशेखर 'आजाद' के कालजयी व्यक्तिव का चित्रांकन कविवर सरलजी ने उनके ऐतिहासिक बलिदानी व्यक्तिव के अनुरूप इन शब्दों में किया है –

'आजाद', हिमालय अडिग उच्च आदर्शों का
वीरता सदा उसकी अविजित ऊंचाई थी।
आजादी का अभिषेक रक्त से होता है
यह मर्म, धर्म जैसा उसने पहचाना था।
'आजाद, हिन्द के बलिदानों का स्वर्ण–लेख
जो गर्म खून से गौरव–लिपि मे लिखा गया।
उसकी साँसों ने देश–भक्ति के स्वर फूँके
जुल्मों के प्रति जलता उसका आक्रोश रहा।
पिस्तौल लगा माथे से घोड़ा दबा दिया
वह खेल गया अपने से ही खूनी होली।
'आजाद', प्रेरणा–स्त्रोत अमर हर पीढ़ी को
धरती की आजादी प्राणों से प्यारी हो,
यौवन अंगारों से अपना श्रृंगार करे
हर फूल बज्र, हर कली कराल कटारी हो।'

कविवर श्रीकृष्ण सरल द्वारा दी गई उपमाओं के अनुसार 'चन्द्रशेखर आजाद तो महाभारत के भीषण शंखनाद थे, यौवन के वैतालिक थे, संकल्पों के भयानक चक्रवात थे। क्षुब्ध सागर के उठते हुए ज्वार थे, वह आदेशों के उच्च–अडिग हिमालय थे, वीरता के तरकश के क्रद्ध तीर थे, शुत्र पर बिजलियाँ गिराने वाले कड़कते घन थे, फूटते हुए भयंकर ज्वालामुखी थे तथा यौवन के गर्मखून से गौरव की लिपि में लिखे गए भारतीय बलिदानों के स्वर्णिम आलेख थे। वह हर पीढ़ी के लिए प्रेरणा–स्त्रोत हैं।' अजेय सेनानी चन्द्रशेखर आजाद के इसी कालजयी व्यतिव को वर्णन के माध्यम से, आत्मकथ्य और घटना–विन्यास के द्वारा जितनी सामर्थ्य और कुशलतापूर्वक सरल जी ने रेखांकित किया है वह सर्वथा चरित्र–नायक के तेजस्वी व्यतिव के अनुकूल हैं।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

कविवर प्रो. श्रीकृष्ण सरल के तृतीय भिन्न तुकान्त महाकाव्य 'सुभाष चन्द्र' तथा चतुर्थ महाकाव्य 'जय सुभाष' के प्रमुख चरित–नायक नेताजी सुभाष चन्द्र बोस हैं जो भारतीय क्रान्ति' चेतना के सूर्य कहे जा सकते हैं। यद्यपि कविवर सरलजी भारतीय–स्वातन्त्रय की बलिवेदी पर स्वयं को होम देने वाले सभी क्रांन्तिकारियों के प्रति समान रूप से श्रद्धानवत रहे है किन्तु फिर भी उन्हें राष्ट्र–नायक नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के तेजस्वी व्यक्तित्व और कालजयी कृतित्व ने सर्वाधिक प्रभावित किया है। इसका कारण स्पष्ट करते हुए उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है कि– 'सभी क्रान्तिकारियों में तुलनात्मक रूप से सुभाष का चरित्र चिन्तन तथा कर्म की दृष्टि से अधिक व्यवस्थित तथा ठोस है ..... देश को स्वतंत्र कराने में उनका योगदान अधिक महत्वपूर्ण है।' यही कारण है कि अन्य क्रान्तिकारियों की तुलना में सरल जी के लिए सुभाषचन्द्र बोस अधिक आकर्षक तथा प्रमुख हैं। इसलिए उन पर दो महाकाव्यों के अतिरिक्त अन्य अनेक ग्रन्थ उन्होंने लिखे हैं।

कविवर सरल जी के हृदय में वीरत्व, शौर्य, साहस अथवा बलिदान के प्रति जो अप्रतिम श्रद्धा रही है उसका उत्स क्रान्ति–पथी वीरों द्वारा प्रदर्शित अलौकिक साहसिकता

ही नहीं अपितु विशुद्ध राष्ट्रीयता है। देश की आजादी एवं कल्याण के प्रति अमर शहीदों के तप, त्याग, बलिदान तथा प्राणोत्संर्ग की भावना ने ही उन्हें सरल जी का इष्ट, वरेण्य एवं श्रद्धेय बनाया है और कहना न होगा कि सभी क्रान्तिकारियों में नेता जी सुभाषचन्द्र बोस का उपर्युक्त गुणों की दृष्टि से सर्वोपरि स्थान है। वह तो क्रान्तिकारियों की मणि–माला के सूमेरू हैं। अतः उनके उज्वल क्रान्तिपथी चरित्र ने सरलजी सर्वाधिक आकर्षित और प्रभावित किया है।

इसी भावना का परिणाम है कि कविवर सरलजी को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के कालजयी व्यतिव में क्रमशः श्रीराम, श्रीकृष्ण, अर्जुन, महावीर, वुद्ध, महाराणा प्रताप, छत्रपजि शिवाजी और गुरू गोविन्द सिंह की प्रतिच्छाया प्रतिभाषित होती दिखाई देती है। यद्यपि इन सभी महापुरूषों के व्यक्तिव कहीं न कहीं आपस में विरोधाभासी प्रतीत होते हैं। किन्तु कविवर सरलजी ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के व्यक्तित्व में इन विभिन्न महापुरूषों के गुणों को अनुस्पूत किया है; यथा –

'इस युग के राम तुम
शत्रु का विनाष सर्वनाष था अभीष्ट तुम्हें।
कालियुग के कृष्ण
ओ सुभाषचन्द्र !
उँगली पर गोवर्धन उठाया था ब्रजेष ने
जन–जन को जाग्रत कर
उठ लिया तुमने समूचे हिन्द देश को।
इस युग के पार्थ तुम
तुमने गांडहव नहीं फेका युद्ध–भूमि में
तप का उद्देश्य ?
देश भारत स्वंतत्र हो।
आए तथा गत से देष की धरा पर तुम
बन्धनयुक्त मातृभूमि देख–देख तड़प उठे
राणा से योद्धा
प्रताप से प्रतापी तुम।
आधुनिक भारत के तुम्हीं शिवराज थे
लड़े तुम अधर्मियों से
लड़े अन्यायियों से
जीवन भर युद्ध किया तुमने अत्याचार से।
तुमने गुरू गोविन्द की शक्ति की उपासना की
चूमते ही रहे प्रखर धार तलवार की।
ओ सुभाष चन्द्र!
पाठक नहीं थे
तुम प्रणेता इतिहास के।
युगों–युगों देते रहो प्रेरणा स्वदेश को
भरते रहो आग यौवन के खून में।

('सुभाष चन्द्र')

कविवर श्रीकृष्ण सरल के लिए राष्ट्रनायक नेताजी सुभाषचन्द्र बोस इतिहास के अध्येता नहीं उसके प्रेरणा–स्त्रोत हैं, काल के विजेता हैं। वह सेवा, तप, त्याग, बलिदान की प्रतिमूर्ति, ओज–शौर्य–उर्जा के श्रृंगार, राष्ट्र–भक्ति के साकार रूप हैं। वे धर्मषील, कर्मशील, दानशील और क्षमाशील हैं। डॉ0 शिवशंकर शर्मा के शब्दों में– नेताजी सुभाषचन्द्र बोस देश के लिए व्यक्ति नहीं व्यक्तित्व हैं। वे हमारी संस्कृति हैं, हमारा इतिहास हैं। वे हमारा धर्म हैं, दर्शन हैं, आदर्श हैं। युगयुगीन है उनका व्यक्तित्व' और कविवर सरलजी नेता जी सुभाषचन्द्र बोस के इसी इतिहास सम्मत व्यक्तित्व का उदात्त एवं प्रेरणास्पद चरित्र–चित्रण 'जय सुभाष' महाकाव्य में इस रूप में करते हैं –

'साधक सुभाष के जीवन का व्रत एक रहा,
भारत–माता की मुक्ति साध्य था जीवन का।
जिसका अन्तर माँ की ममता जैसा अगाध
उथली–अथली सी लगे सिन्धु की गहराई
हिमगिरि हलका–फुलका बौना सा लगे, और
छू सके न जिसके मन को कोई ऊँचाई।
जिसके मन पर सौरयता, स्निाग्धता, पावनता
चित्रित होकर अपने को धन्य समझती हों
जिसकी मुसकानों की रेखायें चुरा–चुरा
मुसकानें शोभित होती हैं, वे सजती हों।
युग के रहस्य डूबते और उतराते हों
अधरखुली नशीली बोझिल जिसकी आँखों में
क्या गिनती सौ–दो सौ की और हजारों की
ढूंढ़े न मिले उस जैसा कोई लाखों में।'

('जय सुभाष')

अशफ़ाक उल्ला खाँ

शहीद अशफ़ाक उल्ला खाँ की शहादत ने कविवर प्रो. श्रीकृष्ण सरल को विषेष रूप से प्रभावित किया है। इसका मूल कारण यह है कि – 'वैसे तो सन् 1857 ई. के प्रथम स्वाधीनता–संग्राम में कई मुसलमानों ने भारत की आजादी के लिए प्राणों की आहुतियां दी थीं किन्तु क्रान्ति के गोनयीय संगठन युग में –जो महाराष्ट्र के चाफेकर–बन्धुओं के बलिदान से प्रारम्भ होकर सन् 1942 ई. तक के जन–आन्दोंलन तक चलता है–अशफाक उल्ला खाँ ही पहला और आखरी मुसलमान था जो भारत की आजादी के लिए बड़ी तमन्ना और बड़े बुलन्द हौंसले के साथ फाँसी के फन्दे पर झूला।'

सरलजी के अपने शब्दों में–अशफ़ाक उल्ला खाँ धातु का बना हुआ क्रान्तिकारी था, वह धातु आज मिलती ही नहीं है। वह सांचा टूट गया है जिसमें वह ढला था। उस जैसी कोई हस्ती अब दिखाई नहीं देती। उसके सांस्कारिक जीवन के लिए यदि सर्वाधिक प्रिय कोई वस्तु थी तो वह उसके देष की धरती–उसकी अपनी भारतमाता। अपने ढंग का एक ही क्रांन्तकारी था वह।' अशफ़ाक उल्ला खाँ बहुत ही सुन्दर, सुडौल और प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी था। उसकी सूझ–बूझ उसकी अध्ययन शीलता और उसका शायराना मिजाज़ भी सर्वविदित है। साहस और शौर्य उसमें कूट–कूट कर भरा था। वह मृदुभाषी, संयमी तथा दृढ़ चरित्र का क्रान्तिाकारी था। कविवर सरल जी ने अशफ़ाक उल्ला खाँ के इसी इतिहास –सम्मत चरित्र को अपने वर्णन–कौशल तथा घटना–विन्यास के द्वारा उजागर किया है। यथा –

'अशफ़ाक देखने में वह खिले कमल जैसा
चौड़ी छाती, थी कमर सिंह जैसी पतली।
कद उँचा–पूरा पाया, देह पठानी थी।
संकल्पों से सपनीली उन्मद आँखे
उन्नत ललाट आभायुत शोभाशाली।
जैसी बलिष्ठ थी देह आत्मा भी वैसी
उत्साह और साहस उसमें क्या कुछ काम था।'
अध्ययन–मनन में डूबा रहता था वह
उसको मिजाज भी मिला शायराना था।'

अशफ़ाक उल्ला खाँ के संयमी और दृढ़ चरित्र का सबसे उज्वल पक्ष वह है जब वह राजस्थान के अपने भूमिगत प्रवास में अपने आश्रयदाता की पुत्री की प्रणय–याचना को अस्वीकार कर देता है क्योंकि उसकी दृष्टि में भावुकता से कर्त्तव्य अधिक श्रेष्ठ था। यथा –

'भावुकता में आकर की उसने भूल नहीं
वह आशा की भावुकता में भी नहीं बहा।
भावुकता पर कर्त्तव्यों की वह श्रेष्ठ विजय
अतिशय विवेक का वह आव्हान कहा जाए।

अशफ़ाक उल्ला खाँ हिन्दू–मुस्लिम एकता का कट्टर समर्थक था और सरलजी ने उसके इस पक्ष को प्रमुखता से रेखांकित किया है। यथा –

'मैं मुसलमान, ईमान छोड़ दूँ मैं कैसे ?
क्या आप चाहते हैं मैं भी हैवान बनूं ?
हिन्दू–मुस्लिम दोनों भारत के वाशिन्दे
इस रिश्ते से दोनों ही भाई–भाई हैं
जो उन्हें लड़ाते–कटवाते, इंसान नहीं
मेरा ख्याल है, वे बेरहम कसाई हैं।

शाहजहाँपुर में फैले साम्प्रदायिक दंगों के समय पं. राम प्रसाद 'बिस्मिल' के साथ मिलकर उन्हें रोकने का प्रयास अपने अब्बा के समझाने पर दया–याचिका प्रस्तुत करने से इंकार कर भारतमाता के लिए कुर्बान हो जाने के जज्बे ने अशफ़ाक उल्ला खाँ के चरित्र को क्रान्तिकारी–समाज में बहुत महत्वपूर्ण बना दिया है जिसका चित्रण सरलजी ने बड़े प्रभावशाली ढंग से किया है। यथा –

'उसने देखा था, जबसे क्रान्ति–काल आया
कोई भी मुस्लिम नहीं कहीं कुर्बान हुआ।
मैं फाँसी पर झूलूँ, लोगों को बतलाऊँ
हैं मुसलमान भी भारत–माता के बेटे।
मैं ही वह पहला मुसलमान कहलाऊँगा।
जो खुश हो, फाँसी के फन्दे पर झूलेगा।'

अशफ़ाक उल्ला खाँ का उदात्त चरित्र और उसकी बेजोड़ शहादत देश के लिए गौरव और प्रेरणा का अक्षय स्त्रोत बन गई है। इसीलिए उसकी शहादत उसकी शहादत पर सरलजी के उद्‌गार देश की राष्ट्र–भक्त जनता के उद्‌गार बन गए हैं यथा –

'वह अड़िग हिमालय था अपने संकल्पों का
वह आजादी का अलख जगाता चला गया।
माँगी तो माँगी–'खाके वतन कफन के हित'
वह वतन परस्तों का मदमाता चला गया।
क्या और भेंट देता वह भारत–माता को
अपने हाथों निज शीष चढ़ाता चला गया।

कविवर सरलजी के साथ ही सारा देश ही अशफ़ाक उल्ला खाँ की बेजोड़ शहादत के प्रति श्रद्धानवत है और रहेगा भी। यथा –

भारत–माता का वह सपूत, वह मुक्तिदूत।
अशफ़ाक नाम जब–जब जबान पर आए, तो
श्रद्धा के भावों से मस्तक झुक–झुक जाए।
(शहीद अशफ़ाक उल्ला खाँ)

कविवर श्रीकृष्ण सरल के सम्पूर्ण महाकाव्यों के चरित–नायकों के चरित्रगत वैशिष्ट्य पर यदि सम्रगतः दृष्टिपात करें तो स्पष्ट होता है कि उनके किसी भी चरित–नायक ने कभी किसी अन्याय को, किसी अत्याचार को, किसी जुल्म को स्वीकार नहीं किया, किसी आतंक के आगे घुटने नहीं टेके और किसी प्रलोभन के आगे अपना मस्तक नहीं झुकाया । उनके चरित–नायकों के हृदय में मातृ–भूमि के प्रति सर्वस्व समर्पण की भावना कूट–कूट कर भरी हुई है । त्याग और बलिदान, शौर्य और पराक्रम, तेजस्विता और ओजस्विता के गुण–धर्मो से सरल जी ने अपने चरित–नायकों के व्यक्तित्वों को सजाया–सँवारा है। इस प्रकार कविवर श्रीकृष्ण सरल ने अपने सभी महाकाव्यों के चरित–नायकों और अन्य पात्रों का चरित्र –चित्रण वर्णन –शैली, आत्मकथात्मक शैली, जन–चर्चाओं जन–श्रुतियों, प्रचलित मान्यताओं और ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों ही रूपों में किया गया है। घटनाओं के माध्यम से भी उन्होंने अपने महाकाव्य के विभिन्न पात्रों के चरित्रों का रेखांकन किया है किन्तु प्रमुखतः उन्होंने वर्णन–शैली को ही एतदर्थ अपनाया है ।

आधार ग्रंथ सूची :

1. सरदार भगत सिंह–महाकाव्य श्रीकृष्ण सरल
2. अजेय सेनानी चन्द्रशेखर, आयाम–महाकाव्य श्रीकृष्ण सरल
3. सुभाषचन्द्र–महाकाव्य–श्रीकृष्ण सरल
4. शहीद अशफाक उल्ला खाँ–महाकाव्य–श्री कृष्ण सरल

सहायक ग्रन्थ सूची :

1. हिन्दी कविता में युगान्तर, डॉ0 सुधीन्द्र
2. आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रवृत्तिया–डॉ0 नगेन्द्र
3. आधुनिक साहित्य–आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी
4. नया हिन्दी काव्य–डॉ0 शिवकुमार मिश्र
5. आधुनिक महाकाव्य–डॉ0 गोविन्द राय